क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

सामान्य रूप से परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, लेकिन उसका समय अक्सर हमारे समय से अलग होता है। हम अधिकतर चाहते हैं कि परमेश्वर तुरंत उत्तर दे—ठीक उसी क्षण जब हम प्रार्थना करते हैं! और हाँ, ऐसा हो सकता है, यदि वही समय उस उत्तर के लिए उचित है।

लेकिन यदि वह चीज़ जिसे तुम माँग रहे हो उस समय परमेश्वर की इच्छा नहीं है, तो तुम्हें प्रभु के समय की प्रतीक्षा करनी होगी। इसका मतलब यह नहीं कि परमेश्वर ने तुम्हें अनदेखा किया है। उसने पहले ही जवाब दे दिया है—बस तुम्हारा उत्तर आज के लिए नहीं है। वह कल के लिए हो सकता है, अगले महीने, अगले वर्ष या कई वर्षों बाद के लिए।

क्योंकि कुछ उत्तरों के लिए परमेश्वर पहले व्यक्ति को तैयार करता है, तब जाकर वह उसे दे सकता है।

एक छोटा बच्चा जो अभी स्कूल भी नहीं जाता, वह अपने पिता से कार माँग सकता है—क्योंकि पिता के पास उसे खरीदने की क्षमता है—लेकिन कोई भी समझदार पिता उसी दिन उसे कार नहीं देगा। वह इस अनुरोध को याद रखेगा और तब पूरा करेगा जब बच्चा बड़ा, परिपक्व और शिक्षित होकर कार चलाने योग्य हो जाएगा।

लेकिन वही बच्चा यदि एक टॉफ़ी माँगे, तो उसे वह तुरंत मिल सकती

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

है, क्योंकि ऐसे अनुरोध के लिए कोई तैयारी नहीं चाहिए।

इसी प्रकार हमारा स्वर्गीय पिता भी है। कुछ प्रार्थनाएँ वह तुरंत पूरी करता है, और कुछ का उत्तर देने में समय लगता है—जब तक व्यक्ति तैयार न हो जाए।

इसी कारण प्रार्थना के बाद परमेश्वर की इच्छा पर भरोसा करना बुद्धिमानी है—जैसा कि दाऊद ने कहा:

भजन संहिता 69:13–14

13 “परन्तु हे यहोवा, मैं तेरी अनुग्रह की घड़ी में तुझसे प्रार्थना करता हूँ; हे परमेश्वर, अपनी बड़ी करूणा के
अनुसार, अपनी सत्य उद्धार से मेरी सुन।”

14 “मुझे कीचड़ से निकालकर बचा ले, ताकि मैं न डूबूँ; मुझे
मेरे बैरियों से और गहरे जल से छुड़ा ले।”

लेकिन कुछ प्रकार की प्रार्थनाएँ ऐसी भी हैं जिन्हें परमेश्वर बिल्कुल उत्तर नहीं देता।

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

वे इस प्रकार हैं:

1. लालच और स्वार्थ से की गई प्रार्थनाएँ

यह वे प्रार्थनाएँ हैं जिनमें व्यक्ति किसी वस्तु को वास्तविक आवश्यकता के लिए नहीं, बल्कि विलासिता, दिखावे, प्रतियोगिता या गलत उद्देश्यों के लिए माँगता है।

उदाहरण: कोई व्यक्ति पैसा इसलिए नहीं माँगता कि वह किसी कठिनाई से निकल सके, बल्कि इसलिए कि वह लोगों को दिखा सके, शेख़ी बघार सके या भोग-विलास कर सके। भले वह मुँह से न कहे, पर उसके मन की भावना यही होती है।

ऐसी प्रार्थनाएँ बाइबल के अनुसार उत्तर नहीं पातीं।

याकूब 4:3

“तुम माँगते हो, और पाते नहीं क्योंकि बुरी अभिलाषाओं से माँगते हो, ताकि उसे अपनी वासनाओं में व्यय करो।”

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

इसलिए हमें अपनी इरादों की जांच करनी चाहिए।

2. दुष्ट और पाप में अड़े हुए व्यक्ति की प्रार्थनाएँ

वह व्यक्ति जो अपने मन में परमेश्वर को नहीं चाहता, परंतु फिर भी परमेश्वर से आशीष चाहता है—उसकी प्रार्थनाएँ स्वीकार नहीं की जातीं।

कोई हत्यारा जो छोड़ना नहीं चाहता, चोर जो चोरी छोड़ने का मन नहीं रखता, व्यभिचारी जो पाप से निकलना नहीं चाहता—भले वह प्रतिदिन वचन सुनता हो—ऐसे व्यक्ति की प्रार्थनाएँ नहीं सुनी जातीं।

यशायाह 1:15–17

15 “जब तुम अपने हाथ फैलाओगे, तब मैं अपनी आँखें तुमसे छिपाऊँगा; हाँ, जब तुम बहुत प्रार्थना करोगे, मैं नहीं
सुनूँगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ लहू से भरे हुए हैं।”

16 “अपने आप को धोओ; शुद्ध करो; अपने बुरे कामों को मेरी आँखों के सामने से दूर करो; बुरा करना छोड़ दो।”

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

17 “भला करना सीखो; न्याय की खोज करो; पीड़ित को छुड़ाओ;
अनाथ का न्याय करो; विधवा का मुक़दमा लड़ो।”

3. शिकायत और कुड़कुड़ाहट वाली प्रार्थनाएँ

ये वे प्रार्थनाएँ हैं जो शिकायत, दोषारोपण और कड़वाहट से भरी होती हैं।

ऐसी प्रार्थनाओं का परिणाम अक्सर विपरीत होता है—व्यक्ति न केवल वह नहीं पाता जो चाहता है, बल्कि जो थोड़ा बहुत है वह भी खो सकता है।

1 कुरिन्थियों 10:10–11

10 “और कुड़कुड़ाओ मत, जैसा उनमें से कई ने किया, और विनाश करनेवाले ने उन्हें नष्ट कर दिया।”

11 “ये सब बातें उनके साथ एक उदाहरण के रूप में हुईं और
हमारे लिए चेतावनी देने के लिए लिखी गईं…”

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

प्रार्थना में शिकायत से बचो—धन्यवाद और नम्रता का भाव रखो।

4. ऐसी प्रार्थनाएँ जो परमेश्वर की परीक्षा लेती हैं

ये वे प्रार्थनाएँ हैं जो शैतान ने मरुभूमि में यीशु को दी गई परीक्षा जैसी होती हैं।

लूका 4:9–12

9 “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो यहाँ से अपने आप को नीचे गिरा दे।”

10 “क्योंकि लिखा है: वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा…”

12 “यीशु ने उत्तर दिया, ‘यह कहा गया है: तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न ले।’”

केवल यह देखने के लिए प्रार्थना न करो कि “परमेश्वर क्या करेगा।”

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

ऐसी प्रार्थनाओं का कोई उत्तर नहीं होता—बल्कि कभी-कभी दंड भी मिल सकता है।

1 कुरिन्थियों 10:9

“और हम मसीह की परीक्षा न लें, जैसा उनमें से कुछ ने किया और
वे साँपों से नष्ट कर दिए गए।”

इन चार प्रकार की प्रार्थनाओं से सावधान रहो

तब तुम अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर अवश्य प्राप्त करोगे।

प्रभु तुम्हें आशीष दे।

यदि आप WHATSAPP पर प्रतिदिन बाइबल-आधारित शिक्षाएँ प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमारे चैनल से जुड़ें:

(लिंक मूल संदेश के अनुसार)

प्रार्थना, सलाह या प्रश्न के लिए नीचे टिप्पणी करें या संपर्क

क्यों परमेश्वर कभी-कभी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता?

करें:

+255 789 001 312 / +255 693 036 618

Share on:
WhatsApp